Paper - IV

MT

2017 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - IV

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. (क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) **चौखट पूर्ण कीजिए।** ½

भक्तिमार्ग की मुख्य सिखावन - **वाणी से हरिनाम लेते रहना ।**

ii) **उत्तर लिखिए।** ½

मन पर।

iii) **उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।**

(1) **हरिनाम** - वाणी से क्या लेते रहना चाहिए ? ½

(2) **वाणी** - मनु के अनुसार सारे व्यवहार किस पर अवलंबित हैं ? ½

2) i) **समझकर लिखिए।**

(1) अंतर की आत्मा (2) बाहर का जगत **1**

ii) **सही पर्याय चुनकर पूर्ण वाक्य फिर से लिखिए।**

(1) अंदर और बाहर दोनों ओर प्रकाश के लिए **वाणी की देहरी पर राम नाम का बिना तेल-बाती का मणिदीप रखना पड़ेगा।** ½

(2) वाणी को चुराने वाला सब प्रकार की चोरी एक-साथ करता है क्योंकि **सारे व्यवहार वाणी पर अवलंबित होते हैं।** ½

3) i) **वचन बदलिए।**

(1) पुरुष - पुरुषों (2) संसार - संसार **1**

ii) **निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए।**

(1) अंधकार - प्रकाश (2) अधार्मिक - धार्मिक **1**

4) हमें हमेशा मधुर वचन बोलने चाहिए। मधुर वाणी बोलने से हमारे मन को शांति मिलती है। इससे मानसिक संतुष्टि भी प्राप्त होती है और हमें नींद भी अच्छी आती है। दूसरे लोग भी प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। मधुर वाणी बोलने के कारण हमारी दूसरों के साथ मित्रता बढ़ने लगती है। इसका प्रयोग करने से समाज में हमारा महत्त्व भी बढ़ने लगता है। अत: हमें मधुर वचन बोलने चाहिए। **2**

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **समझकर लिखिए।**

(1) हिंदू (2) बौद्ध **1**

ii) **चौखट पूर्ण कीजिए।** **1**

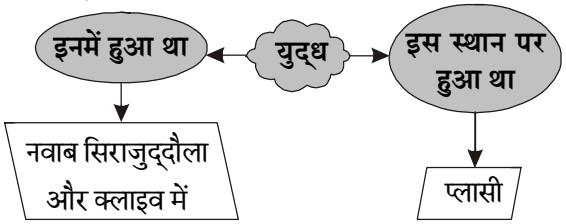

2) i) **उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।**

(1) **ब्यूटि -** पहले पलाश का वैज्ञानिक नाम क्या था ? **½**

(2) **एडविन आर्नल्ड -** 'द लाइफ आफ एशिया' के कवि कौन हैं? **½**

ii) **समझकर लिखिए ।**

(1) लेग्यूमिनोसी परिवार का। **½**

(2) ब्यूटि या फ्रांडोसा। **½**

3) i) **निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।**

(1) ढंका - ढँका (2) बौध्द - बौद्ध **1**

ii) **निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए।**

(1) अपवित्र - पवित्र (2) घृणा - प्रेम **1**

4) वृक्ष से हमें ऐसी कई चीजें मिलती हैं जिनका हम अपने दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं। वृक्ष से लकड़ी, कोयला, गोंद तथा कागज आदि चीजें प्राप्त होती हैं। वृक्ष हमें शुद्ध हवा देते हैं। वे हमें तेज़ धूप में छाया देते हैं। वृक्ष हमें प्राणवायु देते हैं। वृक्ष प्रदूषण पर नियंत्रण रखते हैं। वृक्ष वन-भूमि को मरूस्थल बनने से रोकते हैं। वृक्षों के कारण सभी का जीवन सुरक्षित रहता है। **2**

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) उचित विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए।

i) भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हमारा जाग्रत रहना आवश्यक है,क्योंकि **उसी से हमारी राष्ट्रीयता को बल मिलता है ।** ½

ii) हमारे राष्ट्रीय भावों का अंकुर पल्लवित है, क्योंकि **हमारी राष्ट्रीयता की जड़ें पृथ्वी में बहुत गहरी है ।** ½

2) कारण लिखिए ।

i) हमें भूमि के भौतिक स्वरूप के प्रति सचेत रहना चाहिए, क्योंकि यह **हमारा आवश्यक कर्तव्य है ।** ½

ii) राष्ट्रीयता पृथ्वी के साथ जुड़ी होनी चाहिए, क्योंकि **तभी वह बलवती और समूल हो सकेगी ।** ½

3) देश की भौगोलिक सीमाओं के अंदर का पृथ्वी का भाग राष्ट्र कहलाता है । राष्ट्र के लोग इस भू - भाग के प्रति अपनापन अनुभव करते हैं । वे उसे अपनी मातृभूमि मानते हैं । वे उसकी सुख समृद्धि के लिए प्रयत्न करते हैं । राष्ट्र के सैनिक अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए शहीद होने में गौरव अनुभव करते हैं । इस प्रकार राष्ट्र के स्वरूप में पृथ्वी के भौतिक स्वरूप का बहुत महत्त्व है । **2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए ।** **1**

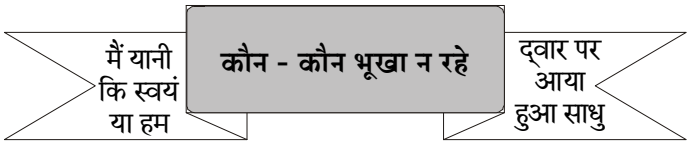

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

2) i) **पद्यांश पर आधारित दो प्रश्न तैयार कीजिए।**

(1) कबीर घर से किसे भूखा न जाने की इच्छा करते हैं ? ½

(2) कबीर ने ईश्वर से अपने लिए कितना धन माँगा है ? ½

ii) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

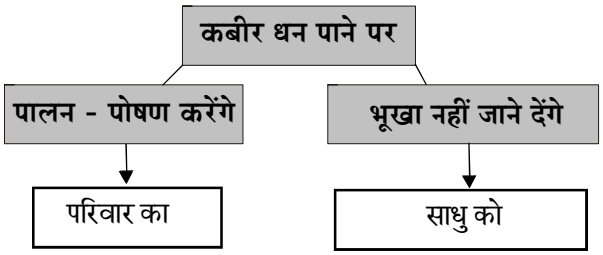

3) i) **शब्द बनाइए - जैसे -** भूख - भूखा

(1) सुख - सुखी (2) दुख - दुखी **1**

ii) **समानार्थी शब्द लिखिए।**

(1) कुटुंब - परिवार (2) साँईं - ईश्वर **1**

4) कबीर जी कहते हैं कि हे ईश्वर मुझे इतना ही दीजिए, जिससे मैं अपने परिवार का पालन - पोषण कर सकूँ। मैं स्वयं भूखा न रहूँ तथा मेरे दरवाज़े पर आया हुआ कोई सज्जन व्यक्ति भी भूखा न रहे अर्थात खाली हाथ वापस न जाए। **2**

उ.2. **(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

i)

ii) **1**

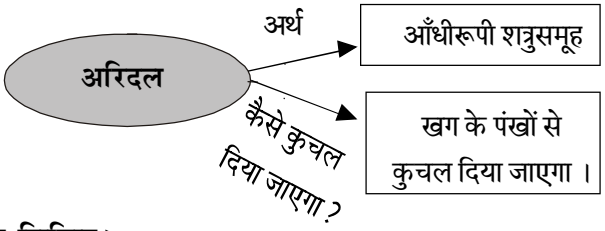

2) i) **समझकर लिखिए।**

(1) प्रलय - झकोरों से मत डरो। ½

(2) उम्मीद की लहरों के साथ आगे बढ़ो। ½

ii) **एक शब्द में उत्तर लिखिए।**

(1) पंखों से (2) अपनो के **1**

3) i) **निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए।**

(1) अंधड़ - आँधी ½

(2) कालबवंडर - मौत का तूफान ½

ii) (1) झकोरों से तू - हलकोरों से तू। ½

(2) हँस - हँसकर - जीवनभर। ½

4) कवि खग के माध्यम से मानव को सदैव चलते रहने की प्रेरणा दे रहे हैं। कवि पक्षी से निर्भीकता, साहस, हिम्मत के साथ जीवनभर उड़ने को कह रहे हैं। कवि का मानना है कि अगर हम थककर या आँधी-तूफान से डरकर वापस लौट आएँगे, तब प्यार करनेवाले ही हमें देखकर हमारी खिल्ली उड़ाएँगे, हम पर हँसेंगे। इसीलिए कवि हमें कहता है कि तुम आशावादी बनकर सतत मंजिल की ओर बढ़ते जाओ। **2**

विभाग - 3 - पूरक पठन

उ.3. **परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।** **(4)**

1) **कृति पूर्ण कीजिए।**

i) **तुलसी की पत्ती को तब चबाया जाता है-** → जब लोग गंदे स्थानों या कीटाणुओं वाली जगहों से लौटते हैं । ½

ii) **मरते समय व्यक्ति के मुँह में तुलसी की पत्ती रखने के पीछे यह है वैज्ञानिक कारण-** → साँस के कीटाणु तुलसी से नष्ट हो जाएँ, फैले नहीं । ½

ii) (1) खाँसी (2) जुकाम **1**

(3) गले की बीमारियाँ (4) मलेरिया

2) किसी भी बात को बिना सोचे-समझे, बिना किसी आधार के चरम सीमा के परे जाकर करना एवम् मानना अंधविश्वास है। आज पूरी दुनिया में विज्ञान की पताका लहरा रही है। जीवन तथा विज्ञान एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। विज्ञान से मानव को असीमित शक्ति प्राप्त हुई है। आज मनुष्य विज्ञान की सहायता से पक्षियों की भाँति आसमान में उड़ सकता है। गहरे से गहरे पानी में साँस ले सकता है। पर्वतों को लाँघ सकता है तथा कई मीलों की दूरियों को चंद घंटों में पार कर सकता है। अत: हमें अपने जीवन में अंधविश्वास को त्यागकर विज्ञान को ही अपनाना चाहिए। **2**

विभाग - 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **½**

लता जी मधुर आवाज में गा रही थीं ।

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए ।** **½**

कोई - प्रश्नवाचक सर्वनाम

2) **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए ।** **1**

मैनेजर को हिदायत दी गई ।

3) i) **निम्नलिखित सहायक क्रियाओं का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **½**

बालक रो पड़ा ।

ii) **सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए ।** **½**

लगा (लगना) - सहायक क्रिया ।

4) **प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए ।** **1**

क्रिया	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्वितीय प्रेरणार्थक**
मानना	मनाना	मनवाना

5) i) **अव्ययों का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **1**

मातृभूमि के लिए सैनिक अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं ।

ii) **अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** **1**

हाँ - विस्मयादिबोधक अव्यय ।

6) **कालपरिवर्तन कीजिए ।** **2**

i) बहुत से नेता आ रहे है । (अपूर्ण वर्तमानकाल)

ii) बहुत से नेता आए थे । (पूर्ण भूतकाल)

7) i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए ।** **1**

सिहर जाना - काँप उठना ।

वाक्य - आतंकी हमले की खबर सुनकर हम सिहर गए ।

ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** **1**

मामाजी को आते देखकर छोटी राधा **खिलखिलाकर हँसने लगी ।**

विभाग - 5 - रचना

उ.**5.** **सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है :** **5**

1) **निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए ।**

सुधाकर पांडे
सुंदर भवन, शनिवार पेठ,
पूना - 422020 ।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
सूरज पुस्तक भंडार, शास्त्रीरोड,
आगरा - 322001

विषय : पुस्तक मँगवाने के लिए पत्र ।

माननीय महोदय,

आपके द्वारा भेजा गया सूची पत्र मिला । मन में बड़ी खुशी हुई कि मेरी मन-पसंद पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं । मैंने उन पुस्तकों को बहुत खोजा, परंतु यहाँ के बुकडिपो में वे उपलब्ध नहीं थीं ।

कृपा करके आप जल्द से जल्द इन पुस्तकों को मुझे भेजने का कष्ट करें । मैं इसे वी.पी.पी. द्वारा छुड़वा लूँगा ।

पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं -

1)	गबन, गोदान	प्रेमचंद	प्रति - १
2)	मधुशाला	हरिवंशराय 'बच्चन'	प्रति - २
3)	हिंदी व्याकरण	भोलानाथ तिवारी	प्रति - ३

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

भवदीय,
सुधाकर पांडे ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
सूरज पुस्तक भंडार,
शास्त्रीरोड,
आगरा - 322001

प्रेषक,
सुधाकर पांडे,
सुंदर भवन,
शनिवार पेठ,
पूना - 422020

अथवा

रमेश पटेल,
50, रामपुर,
नासिक - 456005
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान उपअभियंता जी,
महाराष्ट्र राज्य बिजली मंडल,
नासिक - 456005

विषय : बिजली के बिल के अधिक आने के संबंध में शिकायत पत्र।

माननीय महोदय,

मैं महाराष्ट्र राज्य बिजली मंडल की बिजली का उपयोग वर्षों से कर रहा हूँ। मेरा उपभोक्ता क्रमांक 101625 है।

बड़े दुख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि फरवरी, 2017 का मेरा बिजली का बिल अनुमान से अधिक आया है। बिजली का उपयोग हमेशा की तरह ही हो रहा है फिर बिल इतना अधिक क्यों आया है ? मेरे घर में न तो फ्रिज है और न ही वॉशिंग मशीन। कपड़े भी बाहर से प्रेस करवाते हैं। अनावश्यक लाइट और पंखे का भी प्रयोग नहीं किया जाता, फिर भी इस महीने (फरवरी) का बिल पिछले महीने (जनवरी) के बिल से दो गुना ज्यादा आया है। यह चिंता का विषय है।

अत: आपसे प्रार्थना है कि इस विषय पर ध्यान दें और उचित कार्यवाही करें। इस पत्र के साथ 'फरवरी' महीने की और पिछले पाँच बिलों की झेरॉक्स प्रतियाँ संलग्न हैं।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,
रमेश पटेल।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान उपअभियंता जी,
महाराष्ट्र राज्य बिजली मंडळ,
नासिक - 456005

प्रेषक,
रमेश पटेल,
50, रामपुर,
नासिक - 456005.

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर उसे उचित शीर्षक दीजिए । **5**

जैसे को तैसा

एक घने जंगल में कई प्रकार के पशु-पक्षी आराम से रहते थे । वहीं तालाब के पास एक सारस भी रहता था । उसकी टाँगें और चोंच पतली और बड़ी लंबी थीं । वह मछलियों को अपनी चोंच में पकड़ता और खाता था । एक दिन एक धूर्त लोमड़ी के यहाँ से सारस को भोजन का निमंत्रण मिला। सारस बड़ा ही प्रसन्न हुआ ।

लोमड़ी के घर भोजन में स्वादिष्ट खीर बनाई गई थी और उसे थाली में परोसा गया था । सारस की चोंच लंबी थी, उसे खीर खाने में बड़ी मुश्किल हुई और वह कुछ न खा सका । यह सब देखकर सारस कुछ न बोला और मन ही मन इसका बदला लेने की बात सोचता हुआ घर लौटा । कई दिनों के बाद एक दिन उसे मौका मिल ही गया ।

सारस ने लोमड़ी को भोजन का निमंत्रण दिया । वह बहुत खुश हो गई और सारस के यहाँ पहुँच गई । सारस ने स्वादिष्ट खीर बनाई और सुराही में खाने के लिए परोसी । सुराही की गर्दन का आकार पतला था उसमें उसका मुँह नहीं जा सकता था । अत: लोमड़ी कुछ न खा सकी और उसे भूखा रहना पड़ा और वह बहुत शर्मिंदा हुई ।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि जो जैसा कर्म करेगा, उसको वैसा ही फल मिलेगा ।

3) निम्नलिखित गद्यखंड को ध्यानपूर्वक पढ़कर पाँच प्रश्न तैयार कीजिए, जिनका उत्तर एक वाक्य में लिखा जा सके । **5**

1) तनाव में कौन रहते हैं ?
2) समय की पाबंदी का क्या उद्देश्य है ?
3) उत्साही और फुर्तीले कौन लोग होते हैं ?
4) समय के पाबंद मनुष्य किन - किन कार्यों के लिए उचित अवकाश निकाल लेते हैं ?
5) काम के बोझ की शिकायत कौन करता है ?

उ.6. प्रसंग लेखन । (लगभग 60 से 80 शब्दों में) **5**

मैं संध्या समय नदी किनारे टहलने के लिए गया था । उस वक्त पास के गाँव के दो बच्चे भी नदी किनारे टहलने आए थे । उनमें से एक बच्चे ने अपने साथ लाई हुई कूड़े - कचरे की बैग पानी में फेंक दी । मैं हैरान हो गया और तपाक से चिल्लाकर बोला, ''यह तुम क्या कर रहे हो ? इस प्रकार नदी में कूड़ा कचरा फेंकने से जल प्रदूषण बढ़ता है ।'' मेरे इस कथन का उस बच्चे पर किसी भी प्रकार का असर नहीं हुआ । वह सिर्फ हँस रहा था । मुझे उस पर बहुत गुस्सा आया । मैंने कहा, ''तुमने जो कुछ किया है, वह गलत है और तुम्हें आगे चलकर इस प्रकार का कार्य नहीं करना चाहिए ।'' अपने दोस्तों के साथ मजाक मस्ती करते हुए उसने कहा कि उसके ऐसा करने से कुछ भी फर्क नहीं पड़ने वाला है । यदि वह कचरा नहीं फेंकेगा, फिर भी नदी प्रदूषित होगी । अब मुझसे रहा नहीं गया । मैंने उसे आड़े हाथों लेते हुए डाँटा फटकारा । पश्चात समझाते हुए उससे कहा कि नदी हमारी माता है । हमें उसका ख्याल रखना चाहिए । जल ही जीवन है और हमें उसे भविष्य के लिए सँभालकर रखना चाहिए । मेरे इस कथन का उस बच्चे पर थोड़ा बहुत असर हुआ । उसने भविष्य में जल को प्रदूषित न करने की कसम खा ली और अपने इस करतूत पर मुझसे माफी माँगी । मैंने भी उदार हृदय से उसे माफ कर दिया और हम तीनों नदी में फैले हुए कूड़े - कचरे को एकत्रित करने में व्यस्त हो गए ।

2) विज्ञापन लेखन । (लगभग 60 से 80 शब्दों में) **5**

सभ्यता - संस्कृति की है, सिर्फ एक पहचान
भारत-भारती खादी
हम सबकी आन-बान और शान !

आयोजक -

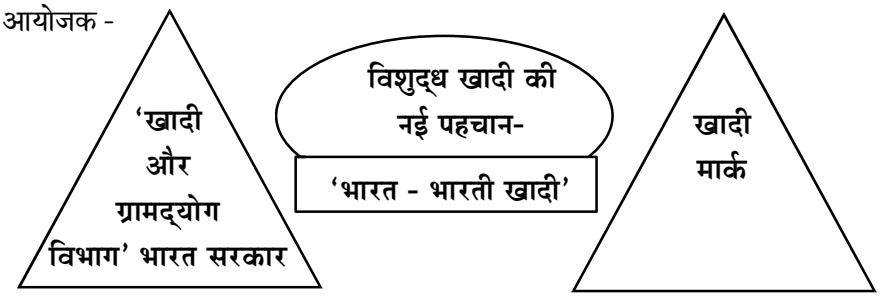

प्रदर्शनी एवं बिक्री
राम-रतन मैदान, वरली मुंबई - 16
प्रात:10.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक
गांधीजी का स्वप्न साकार करें ।

3) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :- (60 से 80 शब्दों में) **5**

1) **अंधश्रद्धा - एक अभिशाप ।**

श्रद्धा का अर्थ है अच्छी बात पर निष्ठा रखना लेकिन जिस बात को चार आदमी सही कह रहे हों, उसे आँख मूँद कर मान लेना उचित नहीं है । किसी बात को स्वीकार करने के पहले, उसे तर्क - वितर्क की कसौटी पर कस लेना आवश्यकता है ।

बिल्ली के रास्ता काट जाने पर अपशकुन मान कर लोग कहीं जा रहे हों, तो वापस लौट पड़ते हैं । यह उचित नहीं है । कई लोग विधवा के दर्शन अशुभ मानते हैं । यह उचित नहीं हैं । अनेक लोग ग्रहण को अशुभ मानते हैं । आज विज्ञान से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि ग्रहण किस तरह लगते हैं । फिर भी लोग अपनी विचारधारा में परिवर्तन नहीं करते ।

आज दुनिया कहाँसे कहाँ पहुँच चुकी है । पर आज भी यात्रा के लिए शगुन विचारवाले लोगों की कमी नहीं है । आज भी लोग नजर लगने की बात को सच मानते हैं । कई पढ़े - लिखे लोग भी भूत - प्रेत, निकारा आदि में विश्वास करते हैं । जादू - टोना, टोटका, जंतर - मंतर के चक्कर में फँस कर अनेक लोग अपना धन बरबाद करते हैं । अंधश्रद्ध के कारण अनेक पशुओं का वध किया जाता है । वह अमानवीय कृत्य है ।

अंधश्रद्धा के शिकार शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के लोग होते हैं । बहुधा अज्ञान के कारण लोग अंधश्रद्धा के शिकार होते हैं । इसके कारण असीमित नुकसान होता है ।

समाज में कुछ लोग अंधश्रद्धा के प्रति लोगों को जागरूक करते हैं । अंधश्रद्धा की यह बुराई समाज से कब जाएगी, कहा नहीं जा सकता ।

2) **<u>मेरा देश महान ।</u>** **5**

भारत मेरी मातृभूमि है । इसके अन्न, जल और मिट्टी से मेरे शरीर का भरण - पोषण हुआ है । इसलिए यह देश मुझे प्राणों से भी प्यारा है ।

यह प्रकृति का लाड़ला देश है । पर्वतराज हिमालय इसके उत्तर में मुकुट की तरह सुशोभित है । दक्षिण में हिंद महासागर इसके चरण धो रहा है । इसके पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में अरब सागर हैं । गंगा और यमुना जैसी नदियाँ इसके हृदय पर हार की तरह शोभा देती हैं । सुंदर कश्मीर हमारे देश का स्वर्ग है ।

संसार का आचार, विचार, व्यापार - व्यवहार और ज्ञान - विज्ञान की शिक्षा - दीक्षा भारत से ही मिली है । क्षमा, करुणा और उदारता की त्रिवेणी सबसे पहले इसी देश में बही है । संयम, त्याग, अहिंसा और विश्वबंधुत्व भारतीय जीवन के आदर्श रहे हैं । इसी देश में विविध कलाएँ जन्मीं और फली - फूलीं । कृषि - विज्ञान, औषधि - विज्ञान आदि का यहाँ अच्छा विकास हुआ । अजंता और एलोरा की गुफाएँ, दक्षिण भारत के सुंदर मंदिर, आगरा का ताजमहल, दिल्ली का कुतुबमीनार, साँची का स्तूप आदि कला के उत्तम नमूने इसी देश में हैं । दुनियाभर के हजारों - लाखों पर्यटक इन्हें देखने के लिए हर साल भारत आते हैं ।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, गीता के गायक श्रीकृष्ण, भगवान महावीर, करुणानिधि गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक, हर्ष, चंद्रगुप्त, शंकराचार्य, महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने अपने अद्भुत कर्मों से इस देश को महान बनाया । कबीर, नामक, नरसी मेहता, मीराबाई, तुकाराम, ज्ञानदेव, स्वामी विवेकानंद, चैतन्य महाप्रभु, परमहंस आदि संतों ने यहाँ भक्ति और ज्ञान की दिव्य सरिताएँ बहाई हैं । लौहपुरुष सरदार पटेल, शांतिदूत जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचंद्र बोस और लालबहादुर शास्त्री जैसे नर - रत्नों पर भारतमाता गर्व करती है । आधुनिक काल में डॉ. सी. वी. रमन जगदीशचंद्र बसु, डॉ. भाभा, डॉ. विक्रम साराभाई तथा डॉ. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिकों ने विज्ञान के क्षेत्र में भारत का सिर ऊँचा उठाया है ।

हमारा देश कभी सांप्रदायिक या संकुचित मनोवृत्ति का नहीं रहा । इसीलिए इस देश में अनेक धर्म पनपे हैं । यहाँ के जनजीवन में विविधता के बावजूद एकता रही है ।

सदियों तक पराधीन रहने के बावजूद हमारे देश की आत्मा को कोई विदेशी शक्ति नहीं जीत पाई । आज सारा संसार स्वतंत्र भारत की महानता को स्वीकार करता है ।

❖❖❖❖